P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* * (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आज के साम्प्रदायिक दौर में गाँधी

सारांश

लोकतंत्र के इस दौर में तथाकथित बुद्धिजीवियो द्वारा नए पीढ़ी के समक्ष गांधी के सम्बन्ध में जो तथ्य तोड़ मरोड़ कर पेश किये जा रहे है उन तथ्यो के सापेक्ष गाँधी के व्यक्तित्व को परिभाषित किया गया है, गाँधी एक व्यक्तित्व से ज्यादा एक विचारधारा है। जो समाज में फैली कुरीतियों के विरुद्ध सत्य को स्थापित करने हेतु सशक्त प्रतिनिधित्व करते है। गाँधी जी अपने सम्पूर्ण जीवन में जाति वादी विचारधारा के विरुद्ध और बेसहारा व वंचितो के अधिकार हेतु अपने द्वारा परिभाषित विरोध करने के नए ढंग से लड़ते रहे .. उन्होंने अपने जीवन में बार बार यह सिद्ध किया कि वो सभी धर्मो के लोगो में सामान रूप से प्रिय है। गांधी और बुद्ध के सिद्धांत में काफी समानता है ,यथा अहिंसा, प्रेम, भाईचारा और मानवता की सेवा आदि। नयी पीढ़ी को देश के विकास हेतु उनके व्यक्तित्व को सही ढंग से आत्मसात करने की आवश्यकता है।

स्नेहवीर सिंह
विभागाध्यक्ष,
राजनीति विज्ञान विभाग,
दिगम्बर जैन कॉलेज,
बड़ौत, बागपत

विवेकानंद
सहयक शोध अधिकारी,
संस्थागत वित्त, बीमा एवं बाह्य सहायतित परियोजना
महानिदेशालय,उ० प्र०,
लखनऊ

मुख्य शब्द : लोकतंत्र, साम्प्रदायिकता,गाँधी जी।

प्रस्तावना

वर्तमान दौर के गंभीर साम्प्रदायिक हालत देखकर गाँधी बरबस ही याद आते हैं क्योंकि गाँधी पूरी उम्र इसी साम्प्रदायिकता को खत्म करने के लिए लड़ते रहे और इसी वजह से उनकी हत्या भी की गई, लेकिन विडंबना है कि जो व्यक्ति पूरी उम्र साम्प्रदायिक सौहार्द की मिसाल के तौर पर कार्य करते रहे, जो इस समय में बिगड़ते हालातों में समाज के सामने एक आदर्श के तौर पर पेश किये जाने चाहिए थे, उन्हें इस समय खलनायक के रूप में नई पीढ़ी के सामने पेश किया जा रहा है, तमाम सोशल साइट्स पर गांधीजी के बारे में ऐसी ऊल–जलूल जानकारी दी जा रही है कि जिसे देखकर लगता है कि गांधीजी ने सारा जीवन मानो महिलाओं के बीच गुजारने के अलावा कोई काम ही नही किया हो, एक विशेष ग्रुप उन्हें हिन्दू विरोधी के तौर पर भी लगातार ऐसे पेश करता आ रहा है मानो उनके जीवन का उद्देश्य केवल हिन्दुओं का विरोध और मुस्लिमों का पक्ष करना ही रहा हो, कुछ कट्टर हिंदूवादी संगठन आज भी उनका विरोध केवल इस कारण से करते हैं कि गाँधी ने हमेशा मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति अपनाई तथा हिन्दुओं से सौतेला व्यवहार किया, बाद में पाकिस्तान को भारत की और से दिए जाने वाले 55 करोड़ रूपये के विषय पर यह बात और मजबूत मानी गई कि गांधी की वजह से बहुसंख्यक वर्ग को बहुत नुकसान उठाना पड़ रहा है तथा ये आगे भी जारी रहेगा। एक बड़े वर्ग का आजादी के समय से आज तक यह मानना रहा है कि जब मुस्लिम लीग की स्थापना और देश का बंटवारा ही धार्मिक आधार पर किया गया,तो मुस्लिम समुदाय के लोगों को भारत में रोककर गांधी ने हिन्दू समाज और अन्य भारतीय लोगों का बड़ा नुक्सान किया है, इससे भी बड़ा गम्भीर मसला यह है कि इन सब आरोपों को झेलने और इन्ही कारणों से अपनी जान देने वाले गांधी को आज तक भी मुस्लिम समुदाय में सम्मान का वह स्थान नही मिला, जिसके वह अधिकारी थे। मुस्लिम लीग के नेता मुहम्मद अली जिन्ना हमेशा गांधी जी को हिन्दू नेता के तौर पर ही मानते रहे। गांधीजी की मृत्यु पर भी जिन्ना ने कहा कि ये हिन्दू समाज के लिए अपूरणीय क्षति है,जबकि गांधी की जान मुस्लिमों और पाकिस्तान का पक्ष लेने के लिए की गई, आज भी हिन्दू अतिवादियों द्वारा गाँधी की आलोचना उनकी मुस्लिम नीति के लिए ही की जाती है।

हालाँकि गांधी ने कहा था कि मेरी जान की चिन्ता मत करो, मैं अपनी कब्र से भी बोलता रहूंगा। गांधी अभी भी बोल रहे हैं। कई अद्‌भुत लोग थे, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका निभाई थी. इसमें तो कोई संदेह ही नहीं, लेकिन यदि कोई एक व्यक्ति, एक चेहरा है, जो वाकई स्वतंत्रता संग्राम की पहचान है तो वे गांधी ही थे. उनके हत्यारे भी यह बात जानते थे. यही वजह थी

कि हमले के लिए उन्होंने गांधी को चुना। उन्हें उनमें हिंदुओं को नीचा देखने के लिए मजबूर करने वाला व्यक्ति दिखाई दिया। मजे की बात है कि जस्टिस काटजू जैसे लोग गांधी को ऐसे व्यक्ति के रूप में देखते हैं, जिन्होंने राम–राज्य, गोरक्षा, ब्रह्मचर्य और वर्णाश्रम धर्म जैसे विचार लाकर स्वतंत्रता संग्राम को जान–बूझकर नुकसान पहुंचाया। वे तर्क देते हैं कि इससे मुस्लिमों में अलगाव पैदा हो गया। जस्टिस काटजू जैसे लोगों का मानना है कि गांधी जी के गाय, रामराज्य और प्रार्थनाओं जैसे कार्यक्रमों से मुस्लिमों के मन में राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति संदेह उत्पन्न हुआ..इसके अतिरिक्त बहुत से लोग तो केवल इस बहस को करते हैं कि हत्यारे नाथूराम गोडसे की गोली लगने के बाद उनके मुख से "हे राम" निकला या "हाय राम"। कुछ लोग तो यहाँ तक उतर आये कि उन्होंने गांधीजी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को हीरो मानकर गोडसे का मंदिर तक बनाने की घोषणा की। परिणाम यह हुआ कि अधिकांश नई पीढ़ी गाँधी को आन्दोलनकारी, सत्यान्वेशक और मानवधर्मी के रूप में ना देखकर बहुत ही नकारात्मक रूप में पहचानती है। ऐसा व्यक्ति भी जिसने अपनी पूरी उम्र में अपने अलावा किसी के लिए कुछ भी ना किया हो, जो पशु की तरह केवल खुद के लिए जीता हो, ऐसे लोग भी गाँधी को कटघरे में खड़ा करके खुद को राष्ट्रप्रेमी घोषित कर रहे हैं।

ये हालात उस देश के हैं जहाँ महात्मा ने जन्म लिया..अगर पूरी दुनिया में निगाह करें तो स्थिति बदल ही जाती है, गाँधी के अलावा पूरी दुनिया में ऐसे बहुत कम महापुरुष हुए, जिनकी मूर्तियाँ अलग–अलग देशों की सरकारें आज भी अपने अपने देश में लगवा रही हैं, हमारे सारे प्रधानमन्त्री और राजनेता दुनिया में अधिकांश जगह यही जिक्र करके वाहवाही पाते रहे हैं कि हम उस देश से हैं, जहाँ गाँधी ने जन्म लिया, प्रसिद्ध वैज्ञानिक एल्बर्ट आइन्स्टीन ने महात्मा गाँधी के बारे में कहा था कि, 'आने वाली पीढ़ियां शायद ही कभी विश्वास करेंगी कि हाड–मांस का ऐसा भी एक इंसान धरती पर कभी पैदा हुआ था।'

अध्ययन का उद्देश्य

गाँधी के स्वंत्रता संग्राम में अहिंसा वादी प्रकिया से पायी गयी विजय को कोई नकार नहीं सकता है, जिसके लिए उनके द्वारा जेल में रहने का विश्व कीर्तीमान स्थापित किया गया, गाँधी के लन्दन में ब्रिटिश सम्राट से मुलाकात के समय उनकी पोशाक के सम्बन्ध में पत्रकार द्वारा पूछे गये प्रश्न का उत्तर उस दौर में प्रचलित राज सी आडम्बर और विलासिता पर करार व्यंग था, इस मुलाकात के बाद चर्चिल द्वारा उन्हें अधनंगा फकीर कहा गया, ऐसे व्यक्तिव को धूमिल करने के लिए सोशल मीडिया के माध्यम से किये जा रहे दुष्प्रचार के कारण नई पीढ़ी के समक्ष गांधी के व्यक्तिव के सम्बन्ध में बन रही छवि के कारण गाँधी के सिद्धांतो को नयी पीढ़ी को पुनः सही ढंग से याद करने की आवश्यकता है।

तथ्यात्मक अध्ययन

वर्तमान समय के साम्प्रदायिक हालातों को देखकर लगता है कि इस देश और बल्कि दुनिया को हर दौर में एक गाँधी की जरूरत है। गाँधी की जरूरत है इंसानियत सीखने के लिए, गाँधी की जरूरत है मानव धर्म को समझने के लिए, गाँधी की जरूरत है दुनिया में दया, प्रेम और भाईचारा बनाए रखने के लिए..पूरे स्वतन्त्रता संघर्ष में गाँधी निःसंदेह एक ऐसा चरित्र रहे हैं जिन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए बेजोड़ प्रयास किये। अगर कहा जाए कि गाँधी का धर्म इंसानियत है तो शायद गलत नहीं होगा।

गाँधी हमेशा एक संत की भांति जिए और मरे। आम भारतीय की अपनी वेशभूषा में ही अपनी बकरी और कुछ शिष्यों के साथ गाँधी गोलमेज सम्मलेन में भाग लेने लन्दन गये। कहते हैं कि गाँधी दुनिया के अकेले ऐसे आदमी थे जो लंगोटी बांधे, चादर ओढ़े और हाथ में लाठी लिए बकिंघम पैलेस में ब्रिटिश सम्राट से मिलने पहुंचे। वहां के लोग यह देखकर दंग रह गये कि कोई व्यक्ति, उनके उस सम्राट से मिलने, जिसके राज में सूरज नहीं छिपता था, लंगोटी और चप्पल में मिलने भी पहुँच सकता है..चर्चिल ने उन्हें 'अधनंगा फकीर' कहा, जो पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हो गया, ब्रिटिश सम्राट के साथ उनकी मुलाकात की बहुत चर्चा हुई, एक पत्रकार ने जब गाँधी से पूछा कि क्या ऐसी पोशाक में सम्राट से मिलने जाना उचित था, तो गाँधी ने मुस्कुराकर जवाब दिया, 'सम्राट ने जितने कपड़े पहने थे वह हम दोनों के लिए काफी थे' गाँधी का यह जवाब पूरे राजसी आडम्बर और विलासिता पर करारा व्यंग था, गाँधी ने लन्दन में, जहाँ उनके ठहरने का प्रबंध एक आलीशान होटल में किया गया था, उसे छोड़कर गन्दी बस्ती की एक छोटी सी कुटिया में रहना पसंद किया।

गाँधी ने इतिहास बनाने का एक अनूठा तरीका दुनिया को सिखलाया। उन्होंने एक ऐसी दुनिया का सपना देखा जिसमे नस्ल और धर्म के आधार पर कोई फर्क ना किया जाए। गाँधी को दुनिया में अहिंसक संघर्ष का जन्मदाता कहा जाता है। फिर भी गाँधी जी का मानना था कि कायर होने से अच्छा है, हिंसक हो जाए। उनका जीवन स्वयं एक आन्दोलन था..उन्होंने अपने जीवन में ना कोई हिंसा की, ना ही कोई अपराध किया फिर भी उन्होंने कुल मिलाकर 2338 दिन जेल में बिताये थे। जिनमे से 249 दिन दक्षिण अफ्रीका में और 2089 दिन भारत की जेलों में बिताये, जो एक विश्व–कीर्तिमान है।

देश के बंटवारे के बाद के हालात को केवल एकमात्र भारतीय नेता भांप रहा था और वो गांधी थे, एकमात्र व्यक्ति जो देश के बंटवारे को रोकने के लिए एडी चोटी का जोर लगाये हुए थे और उसने कहा कि वह भारत को टुकड़ों में नही बांटना चाहते, उन्होंने कहा कि, "देश का बंटवारा मेरी लाश पर होगा" लेकिन गांधी को जीते जी मारकर देश का बंटवारा किया गया।

आजादी मिलने पर, जब सभी नेता पद और ऐश्वर्य के बंटवारे में लगे हुए थे, तब बंगाल के नोआखाली में हुए भीषण दंगों की आग से लोगों को बचाने के लिए अकेले गांधी जूझ रहे थे। जिन्ना के डायरेक्ट एक्शन में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने वाले सुहरावर्दी को कलकत्ता में दंगे को रोकने की एक मात्र शक्ति अहिंसा के उसी पुजारी में दिखाई दी..लेकिन गाँधी की एक खूबी यह भी थी कि वे दुश्मन की भी अच्छाई को पहचानकर उसे

उभारने की पूरी कोशिश करते थे..उन्होंने सुहरावर्दी से नोआखाली के हिन्दुओं की सुरक्षा का पक्का वायदा लेकर ही कलकत्ता में रुकने के आग्रह को माना। कलकत्ता में एक निहत्थे बूढ़े आदमी ने वो चमत्कार कर दिखाया जो पंजाब में माउन्टबेटन के 55000 जवान वह नहीं कर पाए। यही नहीं जब गांधी दिल्ली लौटे तो दिल्ली के हालात और भी ज्यादा विस्फोटक थे, जिनसे निपटे बिना देश के दुसरे हिस्सों की आग पर काबू पाना असंभव होगा, ये गांधी जानते थे। दिल्ली की आग को बुझाने के लिए भी गांधी ने अपने उसी अहिंसक हथियार अनशन का सहारा लिया। गांधी के आमरण अनशन की घोषणा के चमत्कारिक परिणाम हुए और दोनों पक्षों के लोगों ने हथियार डालकर गांधी से अनशन तोड़ने का अनुरोध किया। इतना ही नहीं कॉलिंस और लापियर अपनी पुस्तक "मिडनाइट फ्रीडम" में उल्लेख करते हैं कि गांधी के अनशन से भारतीय ही परेशान हुए हो, ऐसा नहीं है, बल्कि पाकिस्तान के मुस्लिम समुदाय के लोगों की तरफ से भी पत्र आये कि गांधी की जान बचाने के लिए हम लोग क्या कर सकते हैं? इससे गांधी की नैतिक ताकत का अहसास होता है। सार रूप में कहा जाए तो अगर हत्यारे गांधी की जान नहीं लेते और उनके द्वारा घोषित पाकिस्तान यात्रा,जो कि वह पैदल उसी मार्ग से करना चाहते थे जहाँ से शरणार्थी आ जा रहे थे, पूरी हो जाती तो ये भी संभव हो सकता था कि अपने पड़ोसी देश के साथ चलने वाली हमारी चिर प्रतिद्वंदिता सहयोग में परिवर्तित हो जाती और इन दोनों ही देशो को जान माल के रूप में हुई अब तक की अपूरणीय क्षति से बचा जाता।

गांधी ने बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक जैसी धारणाओं को सीधे सीधे चुनौती देने का काम किया। उन्होंने सिद्ध किया कि गलत बात का विरोध करने के लिए बहुसंख्यकों का विरोध भी करना पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए। गांधी का अंतिम उपवास इसका एक बड़ा उदाहरण है। यह बहुमत को चुनौती देने के लिए किया गया उपवास था। अपने बहुमत या बहुसंख्या के बल के अहंकार से मुक्त होकर अल्पसंख्यक के साथ बराबरी के भाव से जीवन गुजारने का सन्देश गाँधी ने इस उपवास से दिया था । भारत में और अब भारत और पाकिस्तान में इसका अर्थ था मुख्यतया। हिंदुओं और मुसलमानों के सम्मानपूर्वक साहचर्य का अभ्यास। लेकिन गाँधी केवल अपने राजनीतिक कार्यों की वजह से ही महत्वपूर्ण नहीं हैं बल्कि उनके सामाजिक काम भी अति महत्वपूर्ण हैं। गाँधी जीवन भर साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए लड़ते रहे। हिन्दू मुस्लिम एकता को मजबूती प्रदान करते रहे।एक दूसरे के प्रति घृणा और विद्वेष से भरे हुए माहौल में प्रेम और भाईचारे की ज्योति लेकर चलने वाला मानवता का वह योद्धा बुद्ध, ईसा और कबीर से शक्ति लेकर तमाम विरोधों के बावजूद आगे बढ़ता रहा। लगभग ढाई हजार साल पहले बुद्ध भी अपने राजसी वस्त्र उतारकर फकीर बन गये थे और पूरी उम्र अहिंसा, प्रेम, भाईचारा और मानवता की सेवा में लगा दी।

गांधी की हत्या पर फ्रेंच अखबार 'ले मोंदे' ने लिखा,'' गांधी ने एक बार फिर दिखा दिया कि वे हमारे वक्त के सबसे बड़े विद्रोही हैं। ''विद्रोहियों को सजा दी जाती है। उपवास समाप्त होने के बारह दिन बाद गांधी को इस विद्रोह के लिए मौत की सजा दी गई। इस अधनंगे फकीर को अगर जाति–पाति को तोड़ने वाला, वंचितों और बेसहारा लोगों में इंसान होने का स्वाभिमान भरने वाला, हिन्दू–मुस्लिम एकता की नींव रखने वाला आधुनिक समय का बुद्ध कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी।

निष्कर्ष

गाँधी द्वारा देश की स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु किये गये प्रयासो से सारी दुनिया प्रभावित ही है, स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती देश में समभाव व शांति बनाये रखते हुये आर्थिक व समाजिक विकास को गति देने की थी, जिसके लिए देशवासियो में परस्पर प्रेमभाव, विश्वास, सभी धर्मो की मान्यताओ का सम्मान करने की आवश्यकता थी, उस समय देश में गांधी ही मात्र एक व्यक्ति थे, जो कि सभी देशवासियों के लिए प्रेरणा स्रोत थे और उनके द्वारा देश में शांति बनाए रखने हेतु किये गये प्रयास भी अविस्मरनीय है, वर्तमान समय में सोशल मीडिया के माध्यम से नई पीढ़ी के समक्ष गाँधी की जो छवि बनाई जा रही है, वह उस व्यक्तित्व के प्रति नयी पीढ़ी की विचारधारा को भ्रमित कर रही है,नयी पीढ़ी को गाँधी और गाँधीवादी विचारधारा का सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से भी सही जानकारी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है, जिससे नयी पीढ़ी उनको आदर्श मानकर उनके द्वारा दिखाये गये मार्ग का अनुसरण कर देश के समग्र विकास में योगदान करे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सत्य के साथ मेरे प्रयोग – महात्मा गाँधी सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, 1950*
2. *महात्मा गाँधी, जीवन और दर्शन – रोमां रोला – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014*
3. *गांधीवाद की शव परीक्षा, यशपाल – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014*
4. *आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, बी. आर. पुरोहित–राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर, 2010*
5. *महात्मा गाँधी (मेरे पितामह),आजादी के नीतिकार – सुमित्रा गाँधी कुलकर्णी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012*
6. *प्रपंच के बहाने महिमा मंडन, के. विक्रम, जनसत्ता, 30 जनवरी, 2015*
7. *गाँधी चर्चा में असत्य के प्रयोग, गिरिराज किशोर, जनसत्ता, 25 अप्रैल 2015*
8. *आधी रात को आजादी, डोमिनिक लापियर एवं लारी कॉलिन्स, मेहता पब्लिशिंग हाउस, 1997*
9. *ओबामा का गाँधी स्मरण, अपूर्वानंद, जनसत्ता, 8 फरवरी 2015*
10. *भारत गाँधी के बाद, रामचंद्र गुहा, पेंगुइन रेंडम हाउस इंडिया, 2012*
11. *भारत नेहरु के बाद, रामचंद्र गुहा, पेंगुइन रेंडम हाउस इंडिया, 2012*